

Course - BA Education Hons, part II ①
paper - III (Educational Psychology & Pedagogy)
Topic - Measurement of Intelligence
prepared by - Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 6 : बुद्धि का मापन
Unit 6 : Measurement of Intelligence

6.1 बुद्धि परीक्षण की संकल्पना (Concept of Intelligence test):-

बुद्धि की माप बुद्धि परीक्षण द्वारा की जाती है। सबसे पहला बुद्धि परीक्षण बिने तथा साइमन ने मिलकर 1905 में बनाया था। इस परीक्षण का कई बार संशोधन भी किया गया। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि परीक्षण बनाकर बुद्धि मापन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस तरह स्पष्ट है कि बुद्धि का मापन मिन-मिन बुद्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है। इनमें कुछ बुद्धि परीक्षण शब्दिक (verbal) होते हैं अर्थात् जिनके एकांशों, निर्देशों आदि में लिखित भाषा का प्रयोग होता है तथा कुछ ऐसे भी परीक्षण होते हैं जिनके एकांशों तथा निर्देशों में लिखित भाषा का प्रयोग नहीं होता है।

6.2 प्रमुख बुद्धि परीक्षण (Important Intelligence test) कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षण निम्नलिखित

हैं :-

① बिने साइमन परीक्षण (Binet-Simon test):-

(Binet) तथा साइमन (Simon) ने इस परीक्षण का निर्माण बिने में किया। यह एक प्रकार का निर्माण बिने है। इसमें शब्दिक एकांशों का प्रयोग किया गया है। इसका पहला संशोधन 1908 ई० में किया गया। 1911 में इस परीक्षण का अंग्रेजी भाषा में गोजर्ड द्वारा अमरीका में किया गया और मानसिक रूप से मंद बच्चों

की कृद्धि मापने में इसका काफी उपयोग किया गया। इस परीक्षण का संशोधन मिन-मिन लोगों ने बाद में किया। इस परीक्षण का सबसे महत्वपूर्ण संशोधन टर्मेन ने 1916 में एनफोर्ड विश्वविद्यालय में किया।

(ii) वेशलर कृद्धि परीक्षण (Wechsler Intelligence Test)

वेशलर ने बच्चों की कृद्धि मापने के लिए 1939 में एक मापनी तैयार किया जिसका नाम वेशलर-बेल्यू मापनी (Wechsler-Bellevue Scale) रखा गया। इस परीक्षण के दो फॉर्म थे और दोनों फॉर्म में दस-दस उपपरीक्षण थे। इस में पांच शब्दिक मापनी थे तथा पांच क्रियात्मक मापनी थे। इस परीक्षण का 1955 में संशोधन किया गया और इसका नाम वेशलर बयस्क कृद्धि मापनी (WAIS) रखा गया। 1981 में इस मापनी का फिट के संशोधन किया गया और इसका नाम WAIS-R रखा गया। इस नयी संशोधित मापनी में 11 उपपरीक्षण हैं जिनमें प्रथम 6 शब्दिक मापनी हैं तथा अन्तिम 5 क्रियात्मक मापनी हैं।

वेशलर ने बच्चों की कृद्धि मापनी के लिए एक दूसरा परीक्षण 1949 में बनाया जिसे 'वेशलर कृद्धि मापनी - बच्चों के लिए' (Wechsler Intelligence Scale for Children या WISC) कहा गया। इस मापनी द्वारा 6 से 16 साल तक के बच्चों की कृद्धि की माप की जाती है।

(iii) केरेल संस्कृति-मुक्त कृद्धि परीक्षण (Cattell Culture-free Intelligence Test)

इस परीक्षण का निर्माण केरेल ने किया। इस परीक्षण में तीन मापनियाँ हैं। मापनी-1 में चार से आठ वर्ष की आयु तथा मानसिक दोषवाले बच्चों के लिए प्रयोग किया जाता है। मापनी 11 आठ से तेरह वर्ष की आयुवाले तथा औसत बच्चों के लिए प्रयोग किया जाता है तथा मापनी 111 में हाई स्कूल के छात्रों, कॉलेज के छात्रों तथा 14 वर्ष से अधिक आयुवाले व्यक्तियों पर प्रयोग किया जाता है। इन तीनों तरह के मापनी द्वारा सामान्य मानसिक क्षमता काक जिसे स्पीयरमैन ने गु-काह कहा है, का मापन होता है।

(iv) रैमेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज (Raven's Progressive Matrices)

इस परीक्षण का निर्माण रैमेन ने 1938 में किया था। इस परीक्षण के दो फार्म हैं - एक बच्चों के लिए तथा दूसरा वयस्कों के लिए। बच्चों के लिए प्रयोग होने वाले फार्म को रैमेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज (~~the~~ Coloured Progressive Matrices) कहा जाता है तथा वयस्कों के लिए प्रयोग होने वाले मैट्रिसेज को स्टैंडर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज (Standard Progressive Matrices) कहा जाता है। यह परीक्षण असाब्रिक परीक्षण है जिसका प्रयोग दोनो ढंग से यात्रि 0 व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से किया जाता है तथा इसके द्वारा मूलतः अमूर्त चिन्तन, दार्शनिक चिन्तन तथा प्रत्यक्षालम्ब ~~की~~ तीव्रता का मापन होता है।

(v) कुछ प्रमुख भारतीय कुट्टि परीक्षण (Some Important Indian Intelligence test)

कुट्टि मापने का प्रयास भारतीय मनोवैज्ञानियों द्वारा भी काफी शक्ति किया गया। डॉ० एम० सी० जोशी द्वारा मानसिक योग्यता परीक्षण (1960), डॉ० प्रयाग मेहता द्वारा सामूहिक कुट्टि परीक्षण (1962), डॉ० आर० के० रावण द्वारा सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण (1961), डॉ० आर० के० अमीका तथा प्रो० राय चौधरी द्वारा नसिक कुट्टि परीक्षण (1971), डॉ० एल० एल० अलोरा द्वारा मानसिक योग्यता की लक्षोर्धित सामूहिक परीक्षा (1972) तथा डॉ० एल० एम० मोहसिन द्वारा सामान्य कुट्टि परीक्षण (1943)। ये सभी कुट्टि परीक्षण साब्रिक कुट्टि परीक्षण हैं जिनका उपयोग खिर्क उन्ही 0 व्यक्तियों की कुट्टि मापने में किया जाता है जो पढ़े लिखे हैं तथा जिन्हें माषा का ज्ञान है।

6.3 शिक्षा में कुट्टि परीक्षण की उपयोगिताएँ (Uses of Intelligence test in Education)

यों तो कुट्टि मापन का महत्व जीवन के प्रत्येक क्षण में है लेकिन शिक्षा में इसके महत्व लक्ष्य अधिक है। कुट्टि मापन की शक्ति उपयोगिताएँ निम्नलिखित हैं: -

(i) शैक्षणिक आधार (Educational base)

कुट्टि परीक्षण के विकास के पूर्व

शिक्षा का आधार था बालकों की वास्तविक आयु। इसलिए अधिक उम्र के बालकों का प्रवेश उच्च वर्ग में तथा कम उम्र के बालकों का प्रवेश निम्न वर्ग में किया जाता था। ऐसा विश्वास किया जाता था कि कृद्धि का विकास वास्तविक आयु के अनुपात में ही होता है। लेकिन कृद्धि परीक्षणों के विकास के बाद यह धारणा गलत साबित हुई। परीक्षणों के आधार पर देखा गया कि बालकों की वास्तविक आयु लगान होने पर भी उनकी मानविक आयु या कृद्धि एक दूसरे से भिन्न होती है।

(ii) बालकों की श्रेणियाँ (Grades of children):-

कृद्धि परीक्षण का एक शैक्षणिक महत्व यह है कि इसके द्वारा बालकों को उनकी कृद्धि के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करने में मदद हो सके।

(iii) श्रेणियों में वैयक्तिक भिन्नताएँ (Individual differences with grades)

कृद्धि परीक्षण के द्वारा किसी श्रेणी विशेष के बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं को भी जानने का अवसर मिलता है। एक श्रेणी के बालकों की कृद्धि लब्धि में अंतर होता है।

(iv) शैक्षणिक निर्देशन (Educational guidance)

शैक्षणिक निर्देशन के दृष्टिकोण से भी कृद्धि क्षापन की उपयोगिता शिक्षा में काफी महत्वपूर्ण है। बालकों को उनकी कृद्धि के अनुकूल ही एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का निर्देशन दिया जाता है।

(v) व्यावसायिक निर्देशन (Vocational guidance):-

वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास है, जिसका एक आवश्यक अंग व्यवसाय है। शिक्षा का उद्देश्य तभी पूरा ही लक्ष्य है जब बालक शिक्षित होकर किसी व्यवसाय में लगायोजित हो गया हो। शिक्षा केवल व्यापक उद्देश्य की पूर्ति में कृद्धि क्षापन का योगदान अनिवार्य है। अतः कृद्धि परीक्षण के द्वारा बालकों की कृद्धि जाँच करने के बाद उन्हें अनुकूल व्यवसाय के लिए निर्देशन दिया जाता है ताकि वे अपने व्यवसाय में अभियोजित होकर उचित उद्देश्य को पूरा कर सकें।

(vi) अभिभावकों के लिए निर्देशन (Guidance for Guardians) :-

कृत्रिम परीक्षण के माता-पिता तथा अभिभावकों को भी अपने बच्चों की समुचित शिक्षा के लिए लची कदम उठाने में मदद मिलती है। उन्हें अब बात को खमभने का मौका मिलता है कि उनके बच्चे कृत्रिम की कितनी श्रेणी में है?

(vii) शैक्षिक दुर्बलता का निदान (Diagnosis of educational deficiency)

शैक्षिक दुर्बलता के कारणों को खमभने तथा दूर करने की दिशा में लची कदम उठाने में भी कृत्रिमण का महत्वपूर्ण सहयोग है। शैक्षिक अक्षमता के अनेक कारणों में कृत्रिम का अधिक या कम होना भी एक मुख्य कारण है। सभी बच्चों पर कृत्रिम होने के कारण अपने पाठ्यक्रम के प्रति उदासीन हो जाते हैं। यही उदासीनता ही शैक्षिक दुर्बलता का एक मुख्य कारण बन जाती है।

(viii) पुखर बालकों के लिए (For bright children) :-

पुखर बालकों की शिक्षा के दृष्टिकोण से भी कृत्रिम परीक्षण का कम महत्व नहीं है। परीक्षणों के आधार पर पुखर कृत्रिम के बालकों को अन्य बालकों से अलग करके उनकी शिक्षा की व्यवस्था एक विशिष्ट उप के की जा सकती है।

(ix) खमस्था बालकों के लिए (For problem children) :-

खमस्थामूलक बालकों की दृष्टिकोण से कृत्रिम मापक बहुत ही उपयोगी है।

(x) शिक्षक के लिए (For Teachers) :-

समुचित एवं प्रभावकारी शिक्षा के लेकिव, योग्य शिक्षकों का खपन बिना कृत्रिम मापक के संभव नहीं है।

6

6.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for exercise)

- Q1- Describe the measurement of intelligence.
कृष्टि का मापन का वर्णन करें।
- Q2- Describe the uses of intelligence test in Education.
शिक्षा में कृष्टि परीक्षण की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।